फरीदाबाद
मजदूर समाचार
मजदूरों के अनुभवों व विचारों के आदान–प्रदान के जरियों में एक जरिया

नई सीरीज नम्बर **116** फरवरी **1998**

हम **लार्सन एण्ड टूब्रो लिमिटेड** के वरकर्स ने सामुहिक रूप से एक कदम उठाया। हमारे एक कामगार साथी श्री राजेन्दर सिंह तेवतिया जो कि पलवल के मीरापुर गाँव के रहने वाले हैं, हमारे यहाँ फैब्रीकेशन डिपार्ट में कार्यरत हैं, दिनांक 23.12.97 को कार्य पर आते समय एक सड़क दुर्घटना के शिकार हो कर गम्भीर रूप से घायल हुये। उन्होंने जैसे ही प्रातः कम्पनी पर खबर दी, हमारे यूनियन के सदस्य और कुछ परसनल के अधिकारी तथा कुछ कामगार साथी बल्लबगढ सरकारी अस्पताल गाड़ी ले कर पहुँचे तथा श्री राजेन्दर सिंह को वहाँ से ई.एस. आई. 3 नम्बर अस्पताल में ले गये जहाँ पर उनका उपचार चल रहा है।

ये सब तो ठीक है परन्तु कुछ समय उपरान्त हमारे सभी कामगार भाइयों ने महसूस किया कि भाई राजेन्दर की आर्थिक रूप से कुछ मदद करनी चाहिये हमने। विचार-विमर्श कर के अपने सभी सहयोगियों की मदद से तनखा वाले दिन कुछ धनराशि कट्ठी कर के भाई राजेन्दर सिंह के लिये दी जिससे वे काफी प्रसन्न हुये। हम उम्मीद करते हैं कि भविष्य में भी हम मजदूर भाई इसी प्रकार एक-दूसरे के दुखों तथा आये हुये अचानक संकट को इसी प्रकार से टालते रहेंगे तथा एक-दूसरे की सहायता करेंगे। मैं फरीदाबाद में स्थित और भी छोटी-छोटी युनिटों के कामगार भाइयों से अनुरोध करता हूँ कि वे भी इसी प्रकार अपने किसी भी मजदूर भाई पर आये संकट के निवारण के लिये इस प्रकार के कार्य करने की चेष्टा करें। एक-दूसरे की मदद से ही मजदूरों में एकता का नया संचार पैदा होता है।

परन्तु बड़े खेद के साथ लिखना पड़ रहा है कि हम में से ही कुछ मजदूर जो कि या तो नेता टाइप होते हैं या चमचे कहो, इन मामलों को भी अपनी स्वार्थसिधि के लिये इस्तेमाल करते हैं तथा अपना उल्लू सीधा करने में लगे रहते हैं।

सम्पादक महोदय, मुझे जैसा लिखना आता है तथा जैसी मेरी सोच है मैंने लिख दिया। कृपा करके गलतियों की तरफ न जा कर मेरे इस उद्देश्य की तरफ ध्यान देना। मैं अपने इस लेख को कोई सही नाम नहीं दे सक रहा हूँ। नाम आप दे दें तो बड़ी कृपा होगी।

मैं आजकल कम्पनियों में नेतागिरी करने वालों तथा लीडरों से इस समाचार पत्र के जरिये ये प्रार्थना करता हूँ कि वो सीधे-सादे मजदूरों की भावनाओं से न खेलें तथा अपने स्वार्थ के लिये किसी मजदूर की रोटी न छीनें।

18.1.98 — लार्सन एण्ड टूब्रो का एक मजदूर

(सम्पादकीय टिप्पणी: स्त्री और पुरुष दोनों मजदूरी करते हैं, दोनों मजदूर हैं। पुरुष के तौर पर ही मजदूर को देखना गलत है।)

दोमुँही चालें

6 महीनों से रोज किसी-न-किसी सड़क पर सुबह या शाम गत्तों पर अपनी बातें लिखे झालानी टूल्स के मजदूरों को विभिन्न फैक्ट्रियों, वर्कशॉपों, दफ्तरों में कार्यरत अथवा कार्य कर चुके दो-ढाई लाख मजदूर देख चुके हैं और हजारों ने रुक कर बातें की हैं। सिलसिला जारी है।

इन बातचीतों से कई छिपे पहलू उजागर हुये हैं और कई प्रक्रियायें अधिक स्पष्ट हुई हैं। मैनेजमेन्टों और लीडरों के शिकन्जों की कुछ बारीकियाँ पकड़ में आई हैं।

दो तथ्य साफ-साफ दिखे हैं :

(1) दिलो-दिमाग पर डर की जकड़

और, (2) भरोसों का भ्रमजाल

यह दो मैनेजमेन्टों और लीडरों के जाल के ताने-बाने हैं।

पिटाई से हम सब डरते हैं क्योंकि इससे दर्द होता है। और गुण्डागर्दी जितनी हमें चोट पहुँचाती है उससे कई गुणा ज्यादा गुण्डागर्दी का डर हमें जकड़े रखता है। ऊपर से इस उल्टी दुनियाँ की नैतिकता भी ऐसी उल्टी है कि चोट मारने वाला-वाली गर्व महसूस करता-करती है तथा दर्द में कराहता-कराहती अपमानित महसूस करता-करती है।

बद से बदतर होती हालात में मैनेजमेन्ट और लीडरों में भरोसों को बनाये रखना मैनेजमेन्टों और लीडरों के लिये अति आवश्यक है अन्यथा उनकी कोई भूमिका ही नहीं बचेगी। भरोसों का भ्रमजाल हम लोगों को हाथ पर हाथ धरे इन्तजार करने की राह पर फेंकता है।

फिल्म, यानि, तिल का ताड़। रुटीन गुण्डागर्दी को फुला कर ऐसा आकार फिल्में देती हैं कि दहशत पैदा हो। साथ ही, नाटकीय परिवर्तनों में भरोसा पैदा करती हैं फिल्में। मैनेजमेन्टों और लीडरों की कोशिश होती है कि हम फिल्मी दुनियाँ में विचरण करें और अपने ऊपर थोपी जा रही बदहाली के दर्शक मात्र बने रहें।

दहशत फैलाने और भरोसे पैदा करने के वास्ते तन्त्र हर समय सक्रिय रहते हैं। फैक्ट्रियों में देखें तो लीडरों और उनके लगुये-भगुओं का रोल ही यह होता है।

ऐसे में, "देखो क्या होता है?" कहते-सोचते इन्तजार करना कहीं मैनेजमेन्ट और लीडरों की दोमुँही चालों में फँसना तो नहीं है?

नये मजदूर

इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित *आयशर ट्रैक्टर्स* में अप्रेन्टिस वरकरों से मैनेजमेन्ट दबाव दे कर अत्याधिक काम करवाती है। काम सीख रहे इन मजदूरों में से कोई एतराज करता है तो सेक्युरिटी गार्ड बुला कर मैनेजमेन्ट उस वरकर को गेट बाहर कर देती है और उस दिन की उससे जबरन छुट्टी भरवा लेती है। इस पर आयशर ट्रैक्टर्स में कार्यरत 60 अप्रेन्टिस वरकरों ने मिल कर कदम उठाया है। यह 60 नये मजदूर इकट्ठे हो कर आई.टी.आई. प्रिन्सिपल से मिले हैं और शिकायत की है।

मजदूर समाचार की हम पाँच हजार प्रतियाँ फ्री बाँटते हैं।
आप भी छोटू गुस्ताख बनिये। अपनी बातें खुल कर कहिये, फ्री में कहिये।

गैर क्रांतिकारी/भ्रष्ट/श्रम पशु

विज्ञान विषय के हाई स्कूल कक्षाओं को पढानेवाले एक शिक्षक साथी मार्क्स-लेनिन-घोष की चिन्तनधारा पर क्रान्ति के गीत गाते हैं, भाषण देते हैं, और पार्टी करते हैं – नेता हैं। सीजन आने पर यानि दस बजे का विद्यालय-समय हो जाने पर सवेरे-सायं तकरीबन बीस-बीस छात्रों के पाँच बैच ट्यूशन के निकालते हैं। मकान-दुकान के रूप में अचल सम्पत्ति व किराया पाने का स्रोत्र, एन. एस. सी. व फिक्स्ड से ब्याज, तथा कपड़ों, घरेलू उपयोग व खान-पान की स्टेटस सिम्बल बन गयी वस्तुओं पर पैसा खर्चते हैं। अपनी समाजवादी क्रांतिकारिता, ईमानदारी और परिश्रम की दुहाई देते हैं।

इन पर समाज शास्त्र के शिक्षक ने टिप्पणी की : " व्यक्तिगत-स्तर पर अपने अभावों की पूर्ति करने का संघर्ष करने वाले तुम भी हम सरीखे ही पूँजीवादी हो, गैर क्रान्तिकारी हो।"

ट्यूशन पढानेवाले गणित अध्यापक ने बोला, "हम जैसे ही भ्रष्ट हैं।"

मेरे मुँह से बेसाख्ता निकला, " श्रम पशु !"

और वह तो भिड़ने की नौबत तक अड़ गये खुद को समाजवादी क्रान्तिकारी साबित करने पर।

30.12.97 — राजबल, मुरादाबाद

अकाल स्प्रिंग लुधियाना

लुधियाना फोकल प्वाइंट ए/बी फेज नम्बर 5 में स्थित अकाल स्प्रिंग लिमिटेड में कम से कम 300 मजदूर काम करते हैं। इनमें से पाँच मजदूरों को निकालने की मालक (या मैनेजर) ने कोशिश की। इसके विरोध में अन्दर उन मजदूरों ने यूनियन बनानी चाही लेकिन असफल रहे। 15.11.97 को पाँचों मजदूरों को दोपहर के बाद गेट पर रोक दिया गया। मजदूरों ने अपने रोटी के डिब्बे (टिफिन) और साइकिलें अन्दर से लाने को कहा तो उनमें से एक मजदूर को अन्दर ले जाया गया। अन्दर उस मजदूर की गुण्डों से अच्छी तरह पिटाई कराई गयी और उसके बाद चौकी में पुलिस के हवाले कर दिया। झगड़ा करने के आरोप में मालकों ने बाकी चार मजदूरों के नाम भी पुलिस चौकी में दर्ज करा दिये। इसके बाद पंजाब इन्डस्ट्रीयल वरकर्स यूनियन और मोल्डर एण्ड स्टील वरकर्स यूनियन के आगुओं ने जा करके उस मजदूर को कचहरी से जमानत पर छुड़ाया और मालक के खिलाफ उस घायल मजदूर का लेबर कोर्ट में तथा चार मजदूरों का लेबर दफ्तर में केस किये। बाद में मालक तारीख पर आया और उन मजदूरों को रखने से इनकार कर दिया। इसके उपरान्त उन मजदूरों का जो बनता था वह दे करके काम पर नहीं रखा, यानि हिसाब कर दिया।

18.1.98 — ए. के. सिंह, लुधियाना

क्लच आटो

12/4 मथुरा रोड, फरीदाबाद स्थित क्लच आटो कम्पनी में दिनांक 25.4.94 से मैं वाइब्रो क्लिनर मशीन पर आपरेटर के पद पर काम कर रहा था। प्रबन्धक भर्ती होते समय कोई भी नियुक्ति-पत्र नहीं दिये। काफी समय तक मुझे ई.एस.आई. कार्ड भी नहीं दिये। ई.एस.आई. काटते थे परन्तु जमा करते थे या नहीं मुझे नहीं मालूम। मशीन पर केमिकल का काम होता है जिसके कारण मुझे चर्म रोग हो गया। मैंने केमिकल के काम से अलग दूसरा काम देने के लिये प्रार्थना की परन्तु प्रबन्धक केमिकल पर ही काम करवाते रहे। इस कारण मैं चर्म रोग से काफी पीड़ित हूँ। काफी प्रार्थना करने के बाद मुझे 1996 में ई.एस.आई. कार्ड दिये। मैं अपना इलाज करवा रहा था उसी दौरान मुझे दिनांक 26.12.97 से डियुटी से मना कर दिये। मैं अब तक जाता रहा और डियुटी के लिये प्रार्थना करता रहा परन्तु आश्वासन दे कर टाल देते हैं। प्रबन्धक कभी मेरा पूरा नाम लिखते थे और कभी आधा ही। इस पर एतराज करने पर वे कहते थे कि तुमको वेतन मिलता है काम करो, कोई नुकसान नहीं होगा। मेरे जैसे ही बहुत श्रमिकों का नाम सर्विस के दौरान बदल कर लिखते हैं और बदले हुये नाम पर हस्ताक्षर करवाते हैं।

... कम्पनी में काम करते हुये मुझे चर्म रोग हो गया है इस कारण प्रबन्धक मुझे सर्विस से हटा रहे हैं।....

2.1.1998 — राधेश्याम, क्लच आटो वरकर

(उप श्रम आयुक्त को दिये पत्र की प्रति हमें भी दी गई है।)

कम्पनी का आदमी

सहमा-सहमा काम करता, कम्पनी का आदमी
दर्द अपना कह नहीं सकता है कोई आदमी
काम कर चुपचाप रह, सुन, डर गया है आदमी
आज कुढ़न में जी रहा है, कम्पनी का आदमी।

थोड़ी सी भी सैलरी को, तरस गया है आदमी
नौकरी भी जायेगी इस महिने, सोचे आदमी
हिसाब भी मिल पायेगा क्या, डर रहा है आदमी
आज कुढ़न में जी रहा है, कम्पनी का आदमी।

कम्पनी में एक ही, चर्चा को करता आदमी
गिर गया एक और विकेट, आज कह रहा है आदमी
रोज चर्चा आम सुन कर, तंग है हर आदमी
आज कुढ़न में जी रहा है, कम्पनी का आदमी।

कितनी अच्छी कम्पनी थी, सोचता है आदमी
आज कैसा वक्त आया, बेकार है हर आदमी
जाने जायेंगे कहाँ कल, सोचता 'ओम' आदमी
आज कुढ़न में जी रहा है, कम्पनी का आदमी।।

— ओम प्रकाश 'ओम', फरीदाबाद

शिफ्ट वर्क— नाइट वर्क (3)

अगर आसपास की दुनियाँ में हो रही दुर्घटनाओं, अकस्मातों पर शांति से, ठंडे दिमाग से, सही दृष्टि से सोचा जाये, अन्वेषण (अनेलिसिस) किया जाये तो भी पता चल सकता है कि यह बात कितनी गम्भीर है। कई सारी गम्भीर मार्ग दुर्घटनायें रात के समय होती हैं। नींद में खींचा जा रहा वाहन चालक सही निर्णय नहीं ले पाता। नतीजा ये होता है कि वाहन आगे चल रहे वाहन से या खड़े वाहन से जोर से टकराता है या सामने से आते वाहन से या बगल के पेड़, खम्भे से टकरायेगा, गड्ढे या नदी-नाले में जा गिरेगा। कई रेल दुर्घटना भी रात को ऐसी ही वजह से होती हैं। इसी तरह रात को कारखानों में भी अकस्मात (एक्सीडैन्ट) होते हैं। नतीजा होता है अकल्पनीय चोट, जान हानि और समय, साधन, सम्पत्ति का नुकसान। सामाजिक खर्च बढ़ता है। खुद भी चोटग्रस्त हो सकता है, जान भी जा सकती है। अगर इन्शुरैन्स है तो मुआवजा मिलने से थोड़ी नुकसान भरपाई हो सकती है। मगर मानव अंग नहीं मिलते। बढते हुये शिफ्ट वर्क - नाइट वर्क के व्यास को नजर में रख कर, गंभीरता समझ कर, सोच कर, जागृत हो कर कुछ करने का समय आ चुका है।

— नवीन छत्रोला, बड़ौदा

अच्छे, गहरे, आत्मीय, सुन्दर, सौहार्दपूर्ण, सहयोगी, प्रेम-उल्लास-मस्ती भरे, भेदभावहीन, बिना ऊँच-नीच वाले सामाजिक रिश्ते हम चाहते हैं। हम कल्पना करते हैं, सपने देखते हैं ऐसी दुनियाँ के जिसमें हम सब के बीच उपरोक्त रिश्ते हों। लेकिन ऐसे रिश्ते बनने और बढने में मंडी-मार्केट, रुपये-पैसे, अनुशासन-डिसिप्लिन, शक्ति भक्ति, बल प्रयोग और सीढीनुमा ऊँच-नीच वाली सामाजिक व्यवस्था बाधक है, रुकावट है, रोड़ा है। इन रोड़ों से जूझने के लिये हम कदमों पर विचार करते हैं, कदम उठाते हैं और प्राप्त अनुभवों पर चर्चा करते हैं। यही इस अखबार का दायरा है।

छोटू गुस्ताख़ बना ड़ाड़ोची

मैं कपूर साहब के आफिस में पहुँचा। उन्होंने बड़ी गर्मजोशी से मेरा स्वागत किया।

"आइये.... आइये रस्तोगी साहब.... आइये", कहते हुये उन्होंने सीट से उठ कर मुझसे हाथ मिलाया तो मैं चौंक गया। मैंने अपने लटके हुये मुँह पर जबरदस्ती मुस्कान लाने की कोशिश की और कुर्सी सरका कर बैठ गया।

"थैंक्यु सर!"

"कल तो कमाल कर दिया आपने।"

"मैंने क्या कमाल किया सर, कमाल तो उन्होंने किया सर। पूरे तीन घंटे घेराव किया मेरा। न सिगरेट, न चाय, न पेशाब-पानी सर!"

"कोई बदतमीजी? मेरा मतलब गाली-गलौज, मारपीट?"

"नहीं सर।"

"नहीं!", कपूर साहब चौंके। "क्या डिमाण्ड थी उनकी?"

"यही कि उन्हें सब कुछ वक्त पर चाहिये। लेकिन मैंने उनसे कोई वायदा नहीं किया।"

"वैरी गुड। करना भी नहीं चाहिये था। उनकी माँगें मानना उनको सिर चढाना है। अच्छा फिर?"

"नाव आई वान्ट टू रिजाइन सर।"

"व्हाइ?"

"सर, आखिर एक इज्जत होती है आदमी की।"

"इज्जत....? शिट!", कहते हुये कपूर साहब ने बुरा मुँह बनाया। "ओ यंगमैन, उस इज्जत का क्या रोना जो आनी-जानी चीज है। अब देखो किसी ने गाली दी, मारपीट की, घेराव किया — मैं मानता हूँ इज्जत गई। कुछ देर बाद किसी ने सलाम ठोका, इज्जत वापस आ गई। इसमें इतना माइन्ड करने की क्या बात है? बी रिलैक्स.....हम सब के लिये यह एक आम बात है।", कपूर साहब ने कहा तो मैं उनका चेहरा देखता रह गया। "और तुम जानते हो रस्तोगी, लेबर द्वारा की गई ऐसी-वैसी हरकत हमारे लिये तरक्की के रास्ते खोलती है।"

"कैसे सर?", मैंने तुरन्त पूछा।

"अरे भई, अब मुझे देखो। उन दिनों मैं पुणे की एक कनसर्न में था। बोनस की डिमाण्ड को ले कर कुछ वरकर्स ने मेरा घेराव किया क्योंकि वह कनसर्न बोनस नहीं देती थी। कहा अवश्य जाता था कि हम पाँच साल में बोनस देते हैं लेकिन कम्पनी के कुछेक वफादारों के अलावा हमने किसी के पाँच साल पूरे होने ही नहीं दिये और वफादार कोई डिमाण्ड कर नहीं सकते। मेरा घेराव लगभग पाँच घन्टे चला। तुम यकीन नहीं कर सकते रस्तोगी कि उन्होंने मेरे साथ क्या-क्या किया। एक ने मेरी सीट पर पेशाब कर दिया। मैंने सिगरेट निकाल कर सुलगानी चाही तो उन्होंने सारा सिगरेट केस मुझसे छीन लिया। वे पीते रहे, मैं देखता रहा। मैंने पानी माँगा तो उन्होंने एक गिलास में पेशाब भर कर मुझे पेश किया। मेरी मेज पर चढ कर बारी-बारी से नाचने लगे। एक तो मेरे मुँह पर थूकने के लिये बार-बार तैयार हो जाता था। यू नो, अगर मेरा बस चलता तो उन्हें कच्चा चबा जाता। उस दिन के बाद मुझे इन वरकर्स से घृणा हो गई, लेकिन मेरे सामने मजबूरी यह थी कि मुझे इन्हीं से अपना काम निकलवाना था।

"कुछ दिनों बाद मेरे सीनियर मिस्टर भल्ला ने मुझे बुलाया और मैनेजमेन्ट की कुछ परेशानियों से मुझे अवगत कराया: 'कम्पनी की फाइनैन्शियल पोजीशन ठीक नहीं है। बैंक लोन की किश्त का इन्तजाम नहीं। हाइकोस हाइड्रोलिक्स के चार हजार वाल्व्स के एडवांस का पैसा हम पहले ही खा चुके हैं। डिलिवरी डेट आ रही है और हमारे पास रॉ मैटेरियल्स के लिये भी पैसा नहीं है। डेढ करोड़ की वर्टीकल बोरिंग मंगलौर डॉक्स में पड़ी है। ऊपर से चालीस-पचास फालतू वरकर्स — ओवर टाइम, ग्रेच्युटी, फन्ड, बोनस, ई एस आई, युनिफॉर्म्स! ऐसा लगता है नाव वी शैल बी लॉस्ट, हम तो बरबाद हो जायेंगे! इन से छुटकारा पाना है। तंग करो इन्हें। वर्क लोड बढा दो। अच्छे-भले काम में मीन-मेख निकालो। वह भड़कें, गलती करें, रिजैक्शन करें। वार्निंग, सस्पैन्ड, चार्जशीट और फिर दो-एक पेशियों की फॉरमैलिटीज के बाद टर्मिनेट कर दो।'

"'लेकिन भल्ला साहब, उन्हें तंग कर टर्मिनेट के हालात तक पहुँचाने में तो साल-डेढ साल लग सकता है। मेरा विचार है हम अगर हड़ताल करवा दें तो सारी प्राब्लम्स सॉल्व और वरकर्स से छुटकारा भी। बाद में हड़ताल के कारण खराब हुई पोजीशन की दुहाई दे कर बैंक से लोन भी मिल जायेगा।'

"'एक्सीलेंट आइडिया! आयम एग्री विद यू। मैं मुलगाँवकर साहब से बात करूँगा। उम्मीद है वे इसकी परमीशन दे देंगे।'

"बाद में मुलगाँवकर साहब ने मुझे बुलाया और कहा, 'ओक्के यंगमैन, मैंने सभी डायरेक्टर्स से बात कर ली है। वी आर गिविंग यू ए चाँस। भल्ला को हम कल से सुपरटैक प्लांट में ट्रान्सफर कर रहे हैं। आगे की सिचुयेशन से निपटने के लिये सारी पावर्स रहेंगी तुम्हारे पास।'

"मुलगाँवकर साहब की बात पर जैसे मुझे विश्वास ही नहीं हुआ। भल्ला साहब ने मुझे बधाई दी, 'काँग्रेचुलेशन मिस्टर कपूर, लेकिन जरा संभल कर खेलना ये हड़ताल का खेल। वैसे भी, मैं और आप साउथ में हैं — अपनों से कोसों दूर।'

"किन्तु मैं सदा से ही अत्याधिक आत्मविश्वास का धनी रहा था। मैंने कहा, 'डॉन्ट वरी मिस्टर भल्ला। फैक्ट्री में वरकर्स पतीले में दूध की तरह से हैं। हम दूध को गर्म करते हैं, उबालते भी हैं। दूध खुद गर्म नहीं होता, यानि, उन्हें उकसा कर हम ही हड़ताल करवाते हैं। अब किसी हड़ताल में कितने वरकर बाहर निकालने हैं यह हम पर डिपेंड करता है — बिलकुल उसी तरह जैसे उबलते हुये कितने दूध को पतीले से बाहर निकल जाने दें यह हम पर डिपेंड करता है। अब हम बाकी बचे दूध से काम चला लेते हैं। जिस तरह नीचे गिरे दूध को समेट कर वापस पतीले में नहीं डालते, उसी तरह निकाले गये वरकर्स को वापस नहीं लेते। हाँ, अगर दूध ज्यादा ही कम पड़ गया तो और मँगवा लेते हैं। रही नॉर्थ या साउथ की बात, उनकी औकात ही क्या होती है? और फिर, किसी कम्पनी में हम जैसे सीनियर्स को 4-5 साल से ज्यादा टिकना भी नहीं चाहिये।'

"'ओ के, मैं एक बार फिर तुम से सहमत हूँ।', भल्ला ने कहा था।

"और रस्तोगी, उसके बाद मैं अपने अन्दर एक चेन्ज लाया। अपना घेराव करने वाले वरकर्स में से कुछ खुर्राट, दबंग वरकर्स छाँटे और उन्हें यूनियन बनाने के लिये उकसाया: 'मैं तुम लोगों के साथ हूँ लेकिन घेराव नहीं, तरीके से काम करो। चुपचाप, बिना कोई आहट किये यूनियन बनाओ और फिर एकदम से डिमाण्ड नोटिस दो। मैनेजमेन्ट पहले तो हील-हुज्जत करेगी। हड़ताल कर दो एक-दो दिन, ज्यादा से ज्यादा हफ्ते-दो हफ्ते में मैनेजमेन्ट टूट जायेगी।'

"और तुम्हें यकीन करना चाहिये रस्तोगी, सब कुछ वैसे ही हुआ जैसे मैं चाहता था। यू नो, परले दर्जे के बेवकूफ तो होते ही हैं ये लोग। पूरे बहत्तर वरकर्स से छुटकारा पाया। पुलिस के हाथों वो चूतड़ कुटवाये सालों के कि आज तक कोई हिसाब लेने भी नहीं आया होगा। घेराव करेंगे मेरा ये थर्ड क्लास आदमी! गन्दी नाली के कीड़े। मुझे सख्त नफरत है इनसे। यू नो, जब पास खड़े होते हैं तो बदबू आती है इन में से।

(बाकी पेज 4 पर)

18 जनवरी को गुडईयर फैक्ट्री में पावर हाउस की कूलिंग टावर पर कार्य करते एक ठेकेदार के मजदूर की मौत हो गई। एक परमानेन्ट वरकर गम्भीर रूप से घायल हो गया और एस्कोर्ट्स मेडिकल द्वारा जवाब दे दिये जाने पर अपोलो अस्पताल में भर्ती है।

18 जनवरी को ही गुडईयर मैनेजमेन्ट ने एक वरकर, बॉयलर आपरेटर सोहन पाल से जबरन रिजाइन लिखवा कर उसे बलि का बकरा बना दिया।

ज्यादा दिन नहीं हुये हैं, सितम्बर 97 में गुडईयर फैक्ट्री में बॉयलर फटा था जिसमें एक परमानेन्ट वरकर मारा गया था।

झाँकियों की झाँकी

✪ तन्त्र के दिवस 26 जनवरी को गण की एक झलक सरकारी समारोह स्थल के पास मथुरा रोड़ पर गत्ते लिये खड़े **झालानी टूल्स** के बारह मजदूरों में दिखाई दी। मैनेजमेन्ट-यूनियनों-लीडरों को देख कर झालानी टूल्स के 2200 मजदूरों ने जब तक डी एल सी-डी सी-मंत्रियों को देखा तब तक उनकी 16 महीनों की तनखा बकाया हो चुकी थी। इस पर अगस्त 97 में इन मजदूरों में से कुछ ने अपनी आपबीती अन्य मजदूरों को बतानी शुरू की। गत्तों पर अपनी बातें लिखे शिफ्टें शुरू या खत्म होने के समय कभी इस तो कभी उस सड़क के किनारे खड़े यह मजदूर गण को तन्त्र की हकीकत की झलक छह महीनों से दिखा रहे हैं। थोड़े-से मजदूरों के इस कदम का इतना असर तो पड़ा है कि झालानी मैनेजमेन्ट को काट-कूट कर ही सही, नवम्बर 97 के दस दिन और दिसम्बर 97 के 31 दिन की तनखा मजदूरों को देनी पड़ी है। और, अपनी 21 महीने 20 दिन की बकाया तनखा के लिये 26 जनवरी को वाई एम सी ए के पास मथुरा रोड़ पर गत्ते लिये खड़े झालानी टूल्स के मजदूरों को फूलों और रंगों से सजायी सरकारी झाँकियाँ ढो रहे वरकरों ने कहा, "तुम्हारी झाँकी हमारी झाँकियों से बहुत अच्छी है क्योंकि तुम असलियत दिखा रहे हो।"

✪ 1985 में बन्द कर दी गई 24 सैक्टर स्थित **डाबड़ीवाला स्टील** के एक मजदूर ने तन्त्र की यह झाँकी दिखाई : एक ही मैनेजमेन्ट, एक ही यूनियन और एक ही गेट था पर तीन कम्पनियाँ दिखाते थे। जयहिन्द रोलिंग और दूसरी कम्पनी बन्द करने के बाद जब डाबड़ीवाला स्टील में मैनेजमेन्ट ने 6 महीने मजदूरों को तनखा नहीं दी तब यूनियन के बड़े लीडरों ने फैक्ट्री लीडरों को मारपीट के लिये उकसाया। मैनेजर की पिटाई हुई। उसके बाद लीडरों और मैनेजमेन्ट ने एग्रीमेन्ट करके पहले तो ले-ऑफ लगाई और फिर 6 महीनों की स्पेशल छुट्टी की। मजदूरों से लीडर चन्दे लेते रहे और मैनेजमेन्ट से मिठाई। कोई वरकर एतराज करता तो उसे लीडर लोग "गुण्डा है" कह कर धमकाते। मैनेजमेन्ट ने 1985 में डाबड़ीवाला स्टील भी बन्द कर दी। लीडर लोग इसके बाद केस लड़ने के नाम पर चन्दा लेते रहे हैं। फैक्ट्री बन्द हुये 13 साल से ऊपर हो गये हैं लेकिन मजदूरों को सर्विस-ग्रेच्युटी का पैसा नहीं मिला है।

✪ इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित **फ्रैन्ड्स आटो** के वरकर रहे रामदेव ने तन्त्र की यह झाँकी दिखाई : बराये नाम की खानापूर्ति तक किये बिना मैनेजमेन्ट ने रामदेव को नौकरी से निकाल दिया। श्रम विभाग में शिकायत की। चमत्कार के तौर पर लेबर कोर्ट ने 5 साल में फैसला दे दिया। अदालत के फैसले के बाद श्रम विभाग के अधिकारियों, बड़े यूनियन लीडरों और वकीलों ने रामदेव को समझौता करने को "तैयार" किया। अदालत के फैसले के मुताबिक जो बनता था उसका एक तिहाई रामदेव को दिया गया और दो तिहाई को लेबर अफसरों-यूनियन लीडरों-वकीलों ने फ्रैन्ड्स आटो मैनेजमेन्ट के साथ बाँट लिया।

मजदूर समाचार

कहने के लिये मजदूरों के पास हजारों बातें हैं। अनुभवों और विचारों का मजदूरों के बीच आदान-प्रदान बहुत जरूरी है। और, एक जरिया है छोटे-छोटे अखबार।

छोटा अखबार निकालना आसान है। लिखने वालों की कमी नहीं है। पैसे बहुत कम खर्च होते हैं। फ्री में बाँटें तो पढ़ने वालों की कमी नहीं है।

तसदीक के लिये हमारे अनुभव पर नजर डालिये। चार पेज की टाइप सैटिंग, पाँच हजार प्रतियों का कागज व छपाई तथा ट्रान्सपोर्ट के खर्चों को जोड़ने पर 2300 रुपये होते हैं। हर महीने 5000 प्रतियाँ छापने और बाँटने का काम बीस लोग आसानी से कर लेते हैं। पैसों का जुगाड़ 20 लोगों की तनखाओं में से तथा अखबार लेते समय आप लोगों द्वारा दिये जाते पैसों के योगदान से आसानी से हो जाता है।

चार पेज के अखबार की एक हजार प्रतियाँ पाँच सौ रुपये में छप जायेंगी। दस मजदूर मिल कर आसानी से यह कर सकते-सकती हैं।

छोटे-छोटे मजदूर समाचारों की बाढ रंगत ही बदल देगी।

छोटू गुस्ताख बना ड़ाड़ोची

(पेज 3 का शेष)

"उसके बाद तो जब तक मैं वहाँ रहा, लीडरों को पाला मैंने। जो चाहता, जैसे चाहता वैसा ही होता। किस की मजाल कि कोई सिर भी उठा सके। इसलिये जरा समझो रस्तोगी, तुम्हारा घेराव नहीं हुआ बल्कि इन लोगों ने तुम्हें बताया है कि कपूर अब बूढा हो चुका है, रिटायरमेंट नजदीक है। अब हमें कपूर की सीट पर रस्तोगी चाहिये। रस्तोगी ड़ाड़ोची है कपूर का। ड़ाड़ोची का मतलब जानते हो? ग्रीक लैंग्वेज का वर्ड है..... ड़ाड़ोची, वो क्या कहते हैं हिन्दी में उत्तराधिकारी। सिकन्दर का उत्तराधिकारी। जैसे एक मूवी थी न मुकद्दर का सिकन्दर, उसके लास्ट में बच्चन खन्ना को अपना ड़ाड़ोची बना जाता है।"

"मैं समझा नहीं सर।", कहते-कहते मेरा लहजा खुशी से काँप गया था।

"मैं जानता हूँ रस्तोगी कि तुम्हें पता होगा कि यहाँ भी चालीस-पचास वरकर्स फालतू हैं लेकिन हैं सब पुराने। जाहिर है पके-पकाये समझदार होंगे। यदि तुम इनसे छुटकारा दिला सको तो....."

"मैं समझ गया सर.... बिलकुल समझ गया। आई विल ट्राई माई बैस्ट।"

"ट्राई नहीं रस्तोगी, यू मस्ट डन इट।"

"ओ के सर।"

"यस। ऐसा कहते हैं। बैस्ट ऑफ लक माई बॉय।"

और मैं अपना रिजाइन जेब में रखे-रखे ही चला आया था। उसी रात मैंने सपना देखा। कम्पनी में से चालीस फालतू आदमियों से छुटकारा दिलाने के इनाम में कपूर साहब की पोस्ट पर बैठा दिया गया हूँ।

आपका

अनिल रस्तोगी उर्फ छोटू गुस्ताख

"विशेष परिस्थितियाँ" - यह भाषा सरकारों, मैनेजमेन्टों, लीडरों की है। खास परिस्थितियाँ कुछ नहीं होती। बद से बदतर होती हालात मजदूरों के लिये आम बात है।

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे0 के0 आफसैट दिल्ली से मुद्रित किया।

RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73

सौरभ लेजर टाइपसैटर्स, बी-546 नेहरु ग्राउंड, फरीदाबाद द्वारा टाइपसैट।